Shodh ManthanVol. XVII Special Issue Jan.2026 ISSN: (P)0976-5255(e)2454-339X, Impact Factor 8.889 (SJIF)
https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17SI01.16

कुशल राजनीतिज्ञा मन्दोदरी

16

सुधांशु प्रकाश शुक्ल
शोधार्थी (हिन्दी विभाग)
गोकुलदास हिन्दू गर्ल्स कॉलेज, मुरादाबाद, उ.प्र.
एम. जे. पी. रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उ.प्र.
ईमेलः sudhanshu.hep@gmail.com

प्रो. (डॉ.) वन्दना पाण्डेय
शोध निर्देशिका (हिन्दी विभाग)
गोकुलदास हिन्दू गर्ल्स कॉलेज, मुरादाबाद, उ.प्र.
एम. जे. पी. रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उ.प्र.
ईमेलः vandanalok2004@gmail.com

सारांश

मानस एक ग्रन्थ ही नहीं वरन् भारतीय संस्कृति की जागृत चेतना है जिसने भारतीय जनमानस को अन्धेरे के स्याह गर्त से निकालने में अपनी महती भूमिका का निर्वहन करते हुए सनातन संस्कृति को जीवन्त रखा। मुगल काल में हिन्दू संस्कृति अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए संघर्षशील थी। विदेशी आक्रान्ताओं द्वारा हमारे जीवन मूल्यों को प्रतिबन्धित एवं कलंकित किया जा रहा था। चारों तरफ अनाचारियों का बोलबाला था। इस कठिन काल में महाकवि तुलसीदास ने श्रीरामचरितमानस की रचना द्वारा आदर्श पात्रों के जीवन मूल्यों का ज्ञान कराया जिसके फलस्वरूप सनातन संस्कृति में नवचेतना का संचार हुआ तथा जो ग्लानि व हीन–भावना धार्मिक, सामाजिक व राजनीतिक स्तर पर व्याप्त थी, उसका परिमार्जन करने की सामर्थ्य प्रस्फुटित हुई। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपनी कृति 'तुलसीदास' में यह तथ्य उद्धृत किया है– "विदेशी विधर्मी शासकों के क्रूर शासन के फलस्वररूप ही सगुण परम्परा निर्गुण परम्परा में बदलने लगी।"[1] विदेशी आक्रान्ताओं द्वारा सगुण उपासना करने वाले सनातनियों को अत्यधिक प्रताड़ित किया जाता था। डर व भय के माहौल में ही सूफी परम्परा, सनातन परम्परा पर अध्यारोपित होने लगी। इसी कठिन काल में महाकवि ने युग चेतना को जगाने के लिए अपने अमर ग्रन्थ श्रीरामचरितमानस की रचना कर सगुण भक्तिधारा को पुनर्जीवित किया।

मुख्य शब्द

स्याह गर्त, अस्मिता, प्रस्फुटित, विधर्मी, सूफी परम्परा, अध्यारोपित, पुनर्जीवित आदि।

प्रस्तावना

श्रीरामकथा की महिमा का वर्णन अनादि काल से चला आ रहा है। यह सब प्रकार से चराचर जगत का कल्याण करने वाली है। श्रीरामकथा सम्पूर्ण पृथ्वी लोक में अपने विभिन्न स्वरूपों में व्याप्त है तथा समाज की प्रेरणास्रोत है। श्रीरामकथा के विषय में तुलसी ने स्वयं शिव के मुखारविन्द से निम्न उद्‌गार व्यक्त कराए हैं–

रामकथा सुंदर कर तारी। संसय बिहग उड़ावनिहारी।।
रामकथा कलि बिटप कुठारी। सादर सुनु गिरिराजकुमारी।।[2]

महाकवि तुलसी ने मानस में स्त्री के विविध आयामों को प्रस्तुत करते हुए समाज में उनकी उपादेयता बताई है। नारी ज्ञान की देवी है। वह अपने अस्तित्व से सम्पूर्ण मानव समाज की प्रेरणा रही है। नारी जग–दृष्टा है। वह स्वयंभू और समर्थ है। वह सरिता की भाँति सदा प्रवाहमय है। श्रीरामचरितमानस एक आर्ष ग्रन्थ है जो युग परिवर्तनकारी है तथा समय के साथ अपरिवर्तनीय है। मानस में तुलसी ने स्त्री पात्रों का जिस सहजता व यथार्थता से वर्णन किया है वह अन्यत्र असम्भव–सा प्रतीत होता है। मानस की कथा स्त्रियों के राजनीतिक कौशलों से भरी हुई है, जिन्होंने अपने राजनीतिक कौशलों से समाज की दिशा को प्रभावित किया है।

कुशल राजनीतिज्ञा मन्दोदरी

मानस के राजनीतिक पात्रों में मुख्यतः माता कैकेई, मन्थरा, तारा, सुरसा, मन्दोदरी आदि प्रमुख स्थान रखती हैं। यह नारियाँ अपने ज्ञान, साहस, वाक्चातुर्य और सौन्दर्य से राजनीति की दिशा बदलने में समर्थ हैं। तुलसी ने मानस में विदुषी स्त्रियों की भूरि–भूरि प्रशंसा की है। तुलसी श्रीरामचरितमानस महाकाव्य में कुशल राजनीतिज्ञा मन्दोदरी के चरित्र का वर्णन मर्यादा की सीमा में करते हैं। वह खल दसग्रीव की पत्नी को ससम्मान मयतनुजा संज्ञा से सम्बोधित करते हैं। वह अत्यन्त सौन्दर्यवान तथा शील गुणों की खान हैं।

मय तनुजा मंदोदरि नामा। परम सुंदरी नारि ललामा।।[3]

लंका में माता मन्दोदरी का चरित्र एक प्रेरणादाई व्यक्तित्व को प्रदर्शित करता है। वह कुशल राजनीतिज्ञा, दूरदृष्टा और संयमशीला हैं। वह अपने पति दशानन रावण के प्रत्येक अनुचित कृत्य की न केवल निन्दा करती हैं वरन् उसे उचित रास्ता भी सुझाती

हैं। दसभाल द्वारा छोटे भाई विभीषण के प्रति किए गए अनुचित बर्ताव का वह विरोध करती हैं तथा विभीषण के बारे में लिए गए निर्णय को अनुचित बताकर कड़े शब्दों में भर्त्सना करती हैं, परन्तु मदान्ध दसशीश सद्वाक्यों पर ध्यान नहीं देता है और घर में फूट के बीज बोता है।

मन्दोदरी कुशल राजनीतिज्ञा तथा स्पष्टवादी महिला का किरदार बखूबी निभाती हैं। मन्दोदरी अपनी दिव्यदृष्टि के बल पर श्रीरामचन्द्र जी को भगवान का अवतार बताती हैं तथा उनके द्वारा समुद्र पर पुल बनाने की घटना का संज्ञान लेकर शत्रु की शक्ति सम्पन्नता से अपने पति को आगाह करती हैं तथा चेतावनी भरे लहजे में कहती हैं–

मंदोदरीं सुन्यो प्रभु आयो। कौतुकहीं पाथोधि बँधायो।।[4]

मन्दोदरी दसानन से कहती हैं कि आपने जिनसे शत्रुता पाल रखी है वह साधारण व्यक्ति न होकर आनन्दकन्द परमपिता परमात्मा ही हैं जिन्होंने पृथ्वी को असुरों और आतताइयों से मुक्त कराने हेतु धरा पर अवतार ले लिया है। मन्दोदरी पति को समझाती हैं कि आपने परस्त्री का हरण कर बड़ा ही अविवेकी व अक्षम्य अपराध किया है, इसलिए आपका कल्याण नहीं हो सकता है। मन्दोदरी जानती हैं कि युद्ध सदैव ही आपत्ति व भयंकर त्रासदी लेकर आता है। मानवमात्र की रक्षा के लिए मन्दोदरी कुशल राजनीतिक चरित्र का प्रयोग कर रावण को सन्मार्ग पर लाने का प्रयास भी करती हैं।

नाथ बयरु कीजे ताही सों। बुधि बल सकिअ जीति जाही सों।।
तुम्हहि रघुपतिहि अंतर कैसा। खलु खद्योत दिनकरहि जैसा।।
अति बल मधु कैटभ जेहिं मारे। महाबीर दितिसुत संघारे।।
जेहिं बलि बाँधि सहसभुज मारा। सोइ अवतरेउ हरन महि भारा।।[5]

मन्दोदरी राज्य की रक्षा के लिए रावण को सलाह देती हैं कि प्रभु दीनदयाल हैं। अतः माता सीता को मान सहित वापस कर माफी माँग कर अपने राज–परिवार की रक्षा कर सकते हो। आपका राज्य करने का समय पूरा हो चुका है। आप अपने अपराधों के प्रायश्चित के लिए वन में जाकर प्रभु का भजन करो, इसी में राज्य व समाज की भलाई है।

रामहि सौंपि जानकी नाइ कमल पद माथ।
सुत कहुँ राज समर्पि बन जाइ भजिअ रघुनाथ।।[6]

रावण अर्थात् खल अपने अहंकार के मद में जब चूर होता है तब उसे नीति की बातें हास्यास्पद प्रतीत होती हैं तथा आपत्ति को अवसर में बदलने में सर्वथा असफल होता है। माता मन्दोदरी जैसी कुशल राजनीतिज्ञा के प्रेरणादायक वचन अनुचित लगते हैं। मन्दोदरी अत्यन्त विवेकवान हैं। अतः वह जान लेती हैं कि काल के वशीभूत प्राणी का विवेक मर जाता है और वह काल कवलित होने की ओर अग्रसर हो जाता है।

मंदोदरीं हृदयँ अस जाना। काल बस्य उपजा अभिमाना।।[7]

तुलसीदास जी कहते हैं कि माता मन्दोदरी परिवार व प्रजा की रक्षा के लिए हार नहीं मानती हैं तथा अपने राजनीतिक कौशल का प्रयोग करने का भरसक प्रयास करती हैं। बार–बार पति द्वारा अवहेलना होने के बाद भी वह उसे सद्ज्ञान देने का प्रयास करती हैं क्योंकि लंका राज्य की रक्षा का भार वह स्वयं अपने कन्धों पर लेकर सन्धि प्रस्ताव हेतु रावण को विवश करती हैं। माता मन्दोदरी को समय की चाल का ज्ञान है तथा अपने कर्णफूल टूटने को वह अपशकुन बताकर रावण को सचेत करती हैं कि जब से यह घटना घटी है तब से मेरे हृदय में एक अवांछित डर बैठ गया है। वह रावण को अपने प्रेम पूर्ण व्यवहार द्वारा नेक रास्ते पर लाने का प्रयास करती हैं तथा उसे पुनः मायापति श्रीराम के असीम बल पराक्रम से अवगत कराते हुए कहती हैं कि हे नाथ! अवांछित प्रकार के कृत्य न करें तथा मेरे सौभाग्य की रक्षा करें।

अस कहि नयन नीर भरि गहि पद कंपित गात।
नाथ भजहु रघुनाथहि अचल होइ अहिवात।।[8]

संयमशीला माता मन्दोदरी रावण द्वारा वर्णित स्त्री स्वभाव के आठ अवगुणों पर विचार न करके अपने कल्याणकारी प्रयास में लगी रहती हैं कि किसी प्रकार युद्ध की विभीषिका टल जाए। वह अपने पति की मिथ्या बातों को न मानकर सदैव उसको नीति के रास्ते पर लाने का प्रयास करती हैं। यह जानने के बावजूद कि पति की मति भ्रष्ट हो चुकी है, वह मन में विचार करती हैं–

मंदोदरि मन महुँ अस ठयऊ। पियहि काल बस मतिभ्रम भयऊ।।[9]

युद्ध में भारी क्षति होने के बावजूद यहाँ तक कि अपने प्रिय पुत्रों के रणभूमि में मारे जाने के बाद भी वह कर्त्तव्य–पथ से अविचल रहती हैं तथा चित्त में दृढ़ता धारण कर कुशल राजनीतिक योद्धा की भाँति लंकापति रावण के सम्मुख पुनः एक बार संयम पूर्ण वाणी में अन्तिम प्रयास में धिक्कारते हुए कहती हैं कि हे दसभाल! कुमति को छोड़ो और ज्ञानियों द्वारा वर्णित नीति अनुसरित करो। मन में यह विचार करो कि लक्ष्मण द्वारा निर्मित रेखा को लाँघने में भी आप असमर्थ रहे। प्रभु के दूत द्वारा लंका दहन तथा सिन्धु पर सेतु बनाना आदि सामान्य घटनाएँ नहीं हैं।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17SI01.16

कंत समुझि मन तजहु कुमतिही। सोह न समर तुम्हहि रघुपतिही।।
रामानुज लघु रेख खचाई। सोउ नहिं नाघेहु असि मनुसाई।।
पिय तुम्ह ताहि जितब संग्रामा। जाके दूत केर यह कामा।।
कौतुक सिंधु नाघि तव लंका। आयउ कपि केहरी असंका।।[10]

मन्दोदरी लंकेश को समझाते हुए कहती हैं कि हे प्राणनाथ! श्रीराम नर न होकर स्वयं नारायण हैं। वह सर्वशक्तिमान हैं। उन्होंने अपने पराक्रम का प्रदर्शन करते हुए मात्र एक बाण के सन्धान द्वारा मारीच को सौ योजन दूर प्रक्षेपित कर दिया था। जनक की सभा में आपने स्वयं माता जानकी से विवाह हेतु प्रयास किया। आपके द्वारा स्वयंवर की एक लघु शर्त भी पूरी न हो सकी। फलस्वरूप आप स्वयंवर की प्रतियोगिता से बाहर हो गए। प्रभु श्रीराम ने स्वयंवर की शर्तों को पूरा करते हुए माता जानकी से विवाह किया। ऐसे परम बलशाली प्रभु से आप कैसे पार पाओगे?

पति रघुपतिहि नृपति जनि मानहु। अग जग नाथ अतुलबल जानहु।।
बान प्रताप जान मारीचा। तासु कहा नहिं मानेहि नीचा।।
जनक सभाँ अगनित भूपाला। रहे तुम्हउ बल अतुल बिसाला।।
भंजि धनुष जानकी बिआही। तब संग्राम जितेहु किन ताही।।[11]

मन्दोदरी दशानन से प्रभु के बल–पराक्रम का वर्णन करते हुए कहती हैं कि आपने देवराज सुत जयन्त के साथ–साथ शूर्पणखा की गति देखी है। अतः आपको इन घटनाओं से सीख लेते हुए युद्ध की विभीषिका से बचने के लिए प्रभु श्रीराम की शरण में जाना उचित होगा।

सुरपति सुत जानइ बल थोरा। राखा जिअत आँखि गहि फोरा।।
सूपनखा कै गति तुम्ह देखी। तदपि हृदयँ नहिं लाज बिसेषी।।[12]

माता मन्दोदरी उसे बीती घटनाओं से एक–एक कर रूबरू कराती हैं तथा उसे सब कुछ गँवाने के बाद भी प्रेरित करती हैं कि अब भी सन्धि कर प्रजा की भलाई हो सकती है। वह कहती हैं कि सूर्यवंश में जन्म लेने वाले प्रभु श्रीराम करुणा के भण्डार हैं, उनके मन में आपके प्रति किसी भी प्रकार का दुर्भाव नहीं है। प्रभु ने आपके पास दूत द्वारा सन्धि प्रस्ताव भेजकर इस बात का प्रमाण दे दिया है।

जेहिं जलनाथ बँधायउ हेला। उतरे प्रभु दल सहित सुबेला।।
कारुनीक दिनकर कुल केतू। दूत पठायउ तव हित हेतू।।[13]

प्रभु श्रीराम द्वारा भेजे गए दूतों ने आपको समझाने का भरसक प्रयास किया; परन्तु आपके द्वारा उचित निर्णय न लेने के कारण दूतों द्वारा सभा के मध्य आपका मान मर्दन भी किया गया। आपके द्वारा युद्ध करने का निर्णय सर्वथा अनुचित है क्योंकि आप प्रभु श्रीराम के दूतों का रण में सामना नहीं कर सकते हैं।

सभा माझ जेहिं तव बल मथा। करि बरूथ महुँ मृगपति जथा।।
अंगद हनुमत अनुचर जाके। रन बाँकुरे बीर अति बाँके।।[14]

मन्दोदरी लंकेश को समझाने का प्रयास करते हुए कहती हैं कि जिन राजा राम के अंगद और हनुमान जैसे सेवक हैं उनको आप मानव समझने की भूल कर रहे हैं। अब भी समय है कि आप अपने ज्ञान चक्षुओं को खोलें और मदान्धता से बाहर निकलते हुए रामभक्ति को अंगीकृत करते हुए सद्मार्ग का वरण करें।

तेहि कहँ पिय पुनि पुनि नर कहहू। मुधा मान ममता मद बहहू।।
अहह कंत कृत राम बिरोधा। काल बिबस मन उपज न बोधा।।[15]

वह कहती हैं कि ज्ञानियों ने सत्य ही कहा है कि जो प्राणी काल के वशीभूत हो जाता है वह उचित मार्ग को त्यागकर अनुचित मार्ग का अनुसरण करने की ओर प्रवृत्त होता है। बुद्धि के विपरीत होने से धर्म, बल और विवेक नष्ट हो जाता है। काल किसी को मारने नहीं जाता है वरन् अपने कर्मों के कारण व्यक्ति स्वतः उसके समीप पहुँच जाता है। हे नाथ! कुछ इसी प्रकार का मतिभ्रम आपको भी हुआ है।

काल दंड गहि काहु न मारा। हरइ धर्म बल बुद्धि बिचारा।।
निकट काल जेहि आवत साईं। तेहि भ्रम होइ तुम्हारिहि नाईं।।[16]

मन्दोदरी राजनीतिक चातुर्य द्वारा रावण को बचाने में असफल रहती हैं तथा श्रीराम द्वारा रावण को मारे जाने पर अत्यन्त दुःखी होती हैं। ऐसी विषम परिस्थिति में भी माता अपना धैर्य नहीं खोती हैं तथा घटित घटनाओं को श्रीराम की विमुखता से जोड़कर अपने मन को सान्त्वना देती हैं।

मंदोदरी रुदन कर भारी। उर ताड़न बहु भाँति पुकारी।।[17]

माता मन्दोदरी लंका की पराजय का मुख्य उत्तरदायी रावण की अविवेकी राजनीति को बताते हुए कहती हैं–

राम बिमुख अस हाल तुम्हारा। रहा न कोउ कुल रोवनिहारा।।[18]

श्रीराम द्वारा रावण को सद्गति देने के उपरान्त मन्दोदरी प्रभु श्रीराम की महिमा वर्णित करते हुए उनको प्रणाम करती हुई कहती हैं कि हे प्रभु! आप करुणानिधान हैं, आपको ब्रह्मा, शिव तथा सुर नमन करते हैं लेकिन मेरे पति लंकेश आजन्म आपसे बैरभाव में रत रहे, यह जानते हुए भी आपने उनको आपना धाम प्रदान किया है। आपको सादर तथा बारम्बार नमस्कार है।

जान्यो मनुज करि दनुज कानन दहन पावक हरि स्वयं।
जेहि नमत सिव ब्रह्मादि सुर पिय भजेहु नहिं करुनामयं।।
आजन्म ते परद्रोह रत पापौघमय तव तनु अयं।
तुम्हहू दियो निज धाम राम नमामि ब्रह्म निरामयं।।[19]

मन्दोदरी सच्चे हृदय से पाप पर पुण्य की विजय स्वीकार करती हैं तथा मन में किसी भी प्रकार की ग्लानि न रखकर प्रभु को धन्यवाद ज्ञापित करती हैं। उनके ऐसे रामभक्तिमय वचन सुनकर सुर–नर–मुनि सब प्रसन्न होते हैं। सम्पूर्ण चराचर जगत सुखानुभूति करता है।

मंदोदरी बचन सुनि काना। सुर मुनि सिद्ध सबन्हि सुख माना।।[20]

निष्कर्ष

श्रीरामचरितमानस के अन्तर्गत मन्दोदरी के व्यक्तित्व का राजनीतिक आयाम विश्लेषित किया गया। विश्लेषणोपरान्त कुछ निष्कर्ष प्राप्त हुए जिनका विवरण इस प्रकार है–

1. स्त्री स्वयं सशक्त है और साक्षात् वाग्देवी की प्रतिकृति है। वह अपने राजनीतिक कौशल द्वारा रण में विजय का अनुमान लगा सकती है तथा सामाजिक समरसता का बीजारोपण कर सकती है। किसी भी महत्वपूर्ण कार्य में स्त्री की राजनैतिक राय सफलता की सम्भावना बढ़ाती है।
2. स्त्री अपने राजनैतिक विवेक से भारी से भारी विपत्ति टालने की सामर्थ्य रखती है। वह अपने वाक्चातुर्य से राज्य की राजनैतिक दिशा परिवर्तित कर सकती है।
3. स्त्रियाँ बहुआयामी प्रतिभा की धनी होती हैं। वे राज्य की सामरिक व्यवस्था का बहुस्तरीय परीक्षण कर आसन्न खतरों का आँकलन कर सकती हैं। वे राजा की अनुपस्थिति में राज्य का कुशलतापूर्वक संचालन करने में भी सक्षम होती हैं।

सन्दर्भ

1. शुक्ल, रामचन्द्र. (1935). *गोस्वामी तुलसीदास.* काशी नागरी प्रचारिणी सभा. इण्डियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग. (पृ0सं0–2).
2. तुलसीदास, गोस्वामी. (1574–1576). *श्रीरामचरितमानस* (284वां संस्करण, पुनर्मुद्रण 2015). गीता प्रेस, गोरखपुर. (पृ0सं0–126, बालकाण्ड, दोहा 114, चौपाई 1).
3. तुलसीदास, गोस्वामी. (1574–1576). *श्रीरामचरितमानस* (284वां संस्करण, पुनर्मुद्रण 2015). गीता प्रेस, गोरखपुर. (पृ0सं0–179, बालकाण्ड, दोहा 178, चौपाई 1).
4. तुलसीदास, गोस्वामी. (1574–1576). *श्रीरामचरितमानस* (284वां संस्करण, पुनर्मुद्रण 2015). गीता प्रेस, गोरखपुर. (पृ0सं0–777, लंकाकाण्ड, दोहा 6, चौपाई 1).
5. तुलसीदास, गोस्वामी. (1574–1576). *श्रीरामचरितमानस* (284वां संस्करण, पुनर्मुद्रण 2015). गीता प्रेस, गोरखपुर. (पृ0सं0–777, लंकाकाण्ड, दोहा 6, चौपाई 3–4).
6. तुलसीदास, गोस्वामी. (1574–1576). *श्रीरामचरितमानस* (284वां संस्करण, पुनर्मुद्रण 2015). गीता प्रेस, गोरखपुर. (पृ0सं0–778, लंकाकाण्ड, दोहा 6).
7. तुलसीदास, गोस्वामी. (1574–1576). *श्रीरामचरितमानस* (284वां संस्करण, पुनर्मुद्रण 2015). गीता प्रेस, गोरखपुर. (पृ0सं0–779, लंकाकाण्ड, दोहा 8, चौपाई 3).
8. तुलसीदास, गोस्वामी. (1574–1576). *श्रीरामचरितमानस* (284वां संस्करण, पुनर्मुद्रण 2015). गीता प्रेस, गोरखपुर. (पृ0सं0–779, लंकाकाण्ड, दोहा 7).
9. तुलसीदास, गोस्वामी. (1574–1576). *श्रीरामचरितमानस* (284वां संस्करण, पुनर्मुद्रण 2015). गीता प्रेस, गोरखपुर. (पृ0सं0–787, लंकाकाण्ड, दोहा 16, चौपाई 4).
10. तुलसीदास, गोस्वामी. (1574–1576). *श्रीरामचरितमानस* (284वां संस्करण, पुनर्मुद्रण 2015). गीता प्रेस, गोरखपुर. (पृ0सं0–807, लंकाकाण्ड, दोहा 36, चौपाई 1–2).
11. तुलसीदास, गोस्वामी. (1574–1576). *श्रीरामचरितमानस* (284वां संस्करण, पुनर्मुद्रण 2015). गीता प्रेस, गोरखपुर. (पृ0सं0–807–808, लंकाकाण्ड, दोहा 36, चौपाई 4–6).
12. तुलसीदास, गोस्वामी. (1574–1576). *श्रीरामचरितमानस* (284वां संस्करण, पुनर्मुद्रण 2015). गीता प्रेस, गोरखपुर. (पृ0सं0–808, लंकाकाण्ड, दोहा 36, चौपाई 6–7).

13. तुलसीदास**,** गोस्वामी. (1574–1576). *श्रीरामचरितमानस* (284वां संस्करण, पुनर्मुद्रण 2015). गीता प्रेस, गोरखपुर. (पृ0सं0–808, लंकाकाण्ड, दोहा 37, चौपाई 1).
14. तुलसीदास, गोस्वामी. (1574–1576). *श्रीरामचरितमानस* (284वां संस्करण, पुनर्मुद्रण 2015). गीता प्रेस, गोरखपुर. (पृ0सं0–808, लंकाकाण्ड, दोहा 37, चौपाई 2).
15. तुलसीदास, गोस्वामी. (1574–1576). *श्रीरामचरितमानस* (284वां संस्करण, पुनर्मुद्रण 2015). गीता प्रेस, गोरखपुर. (पृ0सं0–808, लंकाकाण्ड, दोहा 37, चौपाई 3).
16. तुलसीदास, गोस्वामी. (1574–1576). *श्रीरामचरितमानस* (284वां संस्करण, पुनर्मुद्रण 2015). गीता प्रेस, गोरखपुर. (पृ0सं0–808, लंकाकाण्ड, दोहा 37, चौपाई 4).
17. तुलसीदास, गोस्वामी. (1574–1576). *श्रीरामचरितमानस* (284वां संस्करण, पुनर्मुद्रण 2015). गीता प्रेस, गोरखपुर. (पृ0सं0–847, लंकाकाण्ड, दोहा 77, चौपाई 4).
18. तुलसीदास, गोस्वामी. (1574–1576). *श्रीरामचरितमानस* (284वां संस्करण, पुनर्मुद्रण 2015). गीता प्रेस, गोरखपुर. (पृ0सं0–882, लंकाकाण्ड, दोहा 104, चौपाई 5).
19. तुलसीदास, गोस्वामी. (1574–1576). *श्रीरामचरितमानस* (284वां संस्करण, पुनर्मुद्रण 2015). गीता प्रेस, गोरखपुर. (पृ0सं0–882, लंकाकाण्ड, दोहा 104, छन्द).
20. तुलसीदास, गोस्वामी. (1574–1576). *श्रीरामचरितमानस* (284वां संस्करण, पुनर्मुद्रण 2015). गीता प्रेस, गोरखपुर. (पृ0सं0–883, लंकाकाण्ड, दोहा 105, चौपाई 1).